बुन्देली इतिहास का वैभव–स्थापत्य कला का सौन्दर्य

(आलेख)

लेखक –

डॉ. वीणा चौबे

प्राध्यापक (चित्रकला),

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल,

Email: veenachaubay@gmail.com

सारांश(Abstract):– बुन्देलखण्ड में राज प्रसादों का निर्माण प्राचीन काल से ही होता रहा है किन्तु पुरातन काल के निर्मित महल हमें आज भी देखने को मिल जाते हैं। बुन्देलखण्ड के महल व किले अपनी विशालता, भव्यता, सुन्दरता व स्थापत्य कला के लिए सुविख्यात हैं। इसीलिए माना जाता है कि पुरातात्विक सम्पदा से धनी बुन्देलखण्ड प्रागैतिहासिक काल से ही मानव की क्रीड़ा स्थली रहा है। इसका प्रमाण यहाँ के महल, मंदिर, किले, बावड़ियाँ इत्यादि है। जिनके दर्शन से प्रतीत होता है कि इतिहास की दीवारें अति बुलंदियों को छूति रही हैं।

keywords :

बुन्देलखण्ड में राज प्रसादों का निर्माण प्राचीन काल से ही होता रहा है किन्तु पुरातन काल के निर्मित महल हमें आज भी देखने को मिल जाते हैं। बुन्देलखण्ड के महल व किले अपनी विशालता, भव्यता, सुन्दरता व स्थापत्य कला के लिए सुविख्यात हैं। इसीलिए माना जाता है कि पुरातात्विक सम्पदा से धनी बुन्देलखण्ड प्रागैतिहासिक काल से ही मानव की क्रीड़ा स्थली रहा है। इसका प्रमाण यहाँ के महल, मंदिर, किले, बावड़ियाँ इत्यादि है। जिनके दर्शन से प्रतीत होता है कि इतिहास की दीवारें अति बुलंदियों को छूति रही हैं।

भारत के मानचित्र पर अंकित बुन्देलखण्ड क्षेत्र अपनी अलग पहचान व अलग अस्तित्व रखता है। यह वह धरा हे जिसने समय–समय पर देश का गौरव बढ़ाया है। शिल्पकला और स्थापत्य कला आदि की दृष्टि से अपनी अलग पहचान बनाई है। बुन्देलखण्ड भारत का हृदय स्थल है। इसका इतिहास अति प्राचीन है। डॉ. बलभद्र तिवारी के अनुसार बुन्देलखण्ड सुदूर अतीत में शबर, किरात, पुलिंद और निषादों का प्रदेश था।

वैदिक काल से लेकर बुन्देलों के शासन काल तक दो हजार वर्षों तक इस प्रदेश पर अनेक जातियों और राजवंशों ने शासन किया और यहाँ की सामाजिक और सांस्कृतिक और कलात्मकता को प्रभावित किया किन्तु मौर्य, शुंग, शक, हुड़, कुषाड़, बाकाटक, गुप्त, कलचुरि, चन्देल, अफगान, मुगल, गोंड, मराठे और अंग्रेज इनकी संस्कृति, जातिगत अथवा सामाजिक चेतनाओं को विपुल रूप से बुन्देलवासियों ने आत्मसात किया है।

भारतीय कला के इतिहास में शिल्पकला और स्थापत्य कला का वैभवपूर्ण स्थान है। ''श्री इ.वी. हैबेल'' के शब्दों में – ''अशोक के समय से लेकर आजतक के भारतीय जीवन और विचार धारा का जो अमूल्य संकलन यहाँ की कला पूर्ण वैभवता पर टिका है, उसके लिए विश्व भारत का ऋणी है।'' इस तारतम्य में यहाँ बुन्देलखण्ड की स्थापत्य कला के रूप संक्षेप में वर्णित है जिनकी शुरूआत चन्देल काल में निर्मित बारादरी एवं आल्हा की बैठकें महलों का ही लघुरूप थी जो बड़ी संख्या में पूरे बुन्देलखण्ड में आज भी देखने को मिलती है।

ओरछा में सबसे सुन्दर प्रसाद जहाँगीर महल है कहा जाता है कि इसका निर्माण ओरछा के महाराज राजा मधुकर शाह ने करवाया था और पूर्णता वीरसिंह देव ने दी थी। यह महल 200 वर्गफुट की जमीन पर बना हुआ है। इसके आगन के आस–पास छज्जों पर हाथी की आकृति वाले टेके लगे हुए है। उपर की छतों पर कोनेदार रास्ते बने है उनमें विभिन्न प्रकार की नक्काशीदार जालीयां बनी है जिनमें सर्पाकार डिजाइन्स बनी है। इस महल को सुन्दर फूल पत्तीयों, पशु–पक्षियों, कमल इत्यादि की सुन्दर चित्रकारी से सजाया गया है। इस महल का मुख्य द्वार पूर्व की ओर खुलता है ओरछा के अन्य महलों में शीशमहल, पालकी महल एवं रायप्रवीण महल भी प्रसिद्ध है। यहाँ का राम राजा मंदिर भी वस्तुतः महल ही था।

दतिया का सतखण्ड महल भी अपनी भव्यता और स्थापत्य–कला के लिए प्रसिद्ध है। इस महल का निर्माण भी ओरछा नरेश वीरसिंह देव ने ही कराया था। यह महल नौ वर्षों में बनकर तैयार हुआ था। यह सात मंजिला भवन ग्रेनाईट की चट्टानों को काटकर भवन निर्माण का धरातल तैयार किया गया था। प्रत्येक कोने पर बड़े–बड़े गुम्बद है मध्य में भी गुम्बद हैं। मध्य में उपर वर्गाकार वीथिका है मुख्य द्वार पूर्ण रूप से अलकृत है। जो पूर्व की ओर है स्वास्तिक आधार में बने इस चोकोर महल के प्रत्येक खण्ड में चार चौक हैं। महल की छतों में गचकारी व फारसी दरी शैली में चित्रकारी है। स्तम्भों को नक्काशी से उकेरा गया है। पत्थर की जालियाँ, गुम्बद, भारणी, कंगुरे देखते ही बनते हैं।

छतरपुर जिले के मनियागढ़ दुर्ग में 'राजगढ़महल' पहाड़ के उत्तरी तलहटी में स्थित है। इस महल का निर्माण पन्ना के राजा हिन्दुपंत ने करवाया था। राजगढ़ महल का दरवाजा उत्तर की ओर भव्य चबूतरे पर बना है जिस पर आने–जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। दूर से देखने पर यह महल किला प्रतीत होता है। इसके चारों कोनों पर षटपाली मीनारनुमा गुर्जे है। प्रांगण के चारों ओर सुन्दर कक्ष बने हैं। इन पर सुन्दर छवियाँ बनी हैं। दरवाजे की छत पर 10–10 छतरियाँ क्रमशः के उतार चढ़ाव में बनी है।

बुन्देलखण्ड पूर्वकालिक ओरछा राज्य और वर्तमान जिला टीकमगढ़ के मुख्यालय टीकमगढ़ के पूर्वी अंचल में 25 कि.मी. की दूरी पर है, जो कि जल विहीन एवं जनविहीन क्षेत्र था। धन्य है चन्देल राजा जिन्होंने इस पठारी क्षेत्र के विकास के लिए पहल की और जहाँ जल है वहाँ जीवन है और वहीं विकास है। जैसी लोक कल्याणकारी भावना को चरितार्थ कर कालजयी बनाया और आस पास के क्षेत्रों में विभिन्न बांध बनवाये। इन बांधों में एक ''ग्वालसागर'' नामक बांध भी है। 1812 में ओरछा नरेश विक्रमाजीत सिंह ने इस बांध की सुन्दर गहरी वादियों, घाटियों उत्तर पूर्व, दक्षिण–पश्चिम में फैला 'ग्वालसागर' तालाब एवं पश्चिमी पहाड़ की देकरियों की खन्दकों में सैन्य सामग्री, आयुध भण्डार हेतु विशाल किले का निर्माण करवा दिया। यह दुर्ग बुन्देलखण्ड के बड़े किलों में से एक है। सुदृढ़, दुर्गम एवं अजेय है। इस किले का मुख्य दरवाजा बड़े पहाड़ को खड़ा काट कर पश्चिम दिशा को एक लम्बी सीधी ढाल पर खंदक की ओर बना हुआ है। यहाँ से तीन सुरक्षा चौकी और दो मोड़ पार करके किले के दरवाजे तक पहुंचते है। जो बांध के विशाल प्रांगड़ में खुलता है। दरवाजे के दायें बड़े पहाड़ पर आल्हा मुण्डा शिखर पर दो गुर्जे और एक सुरक्षा चौकी है तालाब के बांध प्रांगण में तालाब की और विशाल भव्य खम्भों पर खड़ा दो मंजिला दीवानखाना है, जिसके पार्श्व में शिवघाट पर बालदाऊ जी का मंदिर है। विक्रम जीत सिंह ने बालदाऊ जी को समर्पित करते हुए इस किले का नाम बल्देवगढ़ किला रखा गया था। इस किले में एक रिसाला चौक है। जिसके प्रांगण में राज निवास है। इसे कचहरी चौक भी कहा जाता है। इस चौक के पश्चिम में सीढ़ियाँ है जो राजमहल को जाती हैं। चौक के पूर्वी भाग में तालाब के अन्दर रानीमहल, रानिवास चोपरा (स्वीमिंगपुल) है। रानी महल बड़ा सुन्दर है विशाल है चौपरा के मध्य में शिव मंदिर है।

विक्रमजीत सिंह जी ने दक्षिण पूर्व में ग्वाल सागर तो उत्तर दिशा में जुगल सागर तालाब बनाकर एवं पश्चिम में धरम सागर तालाब बनाकर किले को जल के मध्य कर दिया था। इसीलिए बल्देवगढ़ का लेक व्यू एवं फोर्ट व्यू वैभवपूर्ण और सौन्दर्यपूर्ण है।

ग्वालियर के किले में स्थित गुजरी महल अपनी भव्यता और इतिहास के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसका निर्माण राजा मानसिंह तोमर ने करवाया था अपनी प्रिय रानी मृगनयनी के लिए। मृगनयनी गूर्जर जाती की थी इसलिए इस महल को गुजरी महल नाम दिया गया। कटावदार पत्थर के काम से निर्मित यह दो मंजिला महल 332 फुट लम्बा तथा 196 फुट चौड़ा है इसके भीतरी भाग में एक विशाल आंगन है, जिसके चारों और खुदाई के काम से युक्त ब्रेकटो तथा मेहराबदार दरवाजों से युक्त

अनेक छोटे कक्ष बने हुए हैं। इसके बाहरी भाग में गुम्बजदार बुर्ज है। छज्जों के नीचे सुन्दर घुमावदार ब्रेकटों की पंक्ति है और कुछ चौरस आकृतियाँ हैं जिनमें किसी समय मीनाकारी युक्त टाइल जुड़े हुए थे।

ग्वालियर के किले में राजा मानसिंह का महल भी निर्मित है। जो अत्यन्त गौरवशाली स्मारक है। जिसे फर्गुसन ने भारत के प्रारंभिक काल में निर्मित हिन्दू प्रसादों में अत्यंत भव्य एवं आकर्षक उदाहरण माना है। यह महल चार मंजिला है। इसकी दो मंजिले जमीन के नीचे और दो मंजिल जमीन के नीचे और दो मंजिल जमीन के ऊपर है। महल आयताकार है जिसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ओर 300 फुट तथा पूर्व से पश्चिम की ओर 160 फुट है। महल अत्यंत कुशलता पूर्वक अलंकृत किया गया है।

चन्देरी का कौशल महल भी अत्यंत प्रसिद्ध राजप्रसाद है। इसका निर्माण मालवा के सुल्तान महमूद खिल्जी ने जौनपुर की जीत की खुशी में सन् 1445 में करवाया था एवं इसका नाम ''कोशके हाफ्त मंजिल'' रखा था। फारसी में कौशक का अर्थ है आलीशान महल कोशक महल 116 फीट की वर्गाकार इमारत है। इसकी संयोजना क्रास जैसी है वस्तुतः कौशक महल की बराबर दूरी पर स्थित बराबर माप के चार महलों का संयुक्त रूप है वे सभी एक चौड़े रास्ते से जुड़े हुए है। इस महल में गुम्बद नहीं थे। संभवतः हर कोने पर छतरी थी प्रवेश द्वार महराबदार है और उसे महराबदार आलो से सजाया गया है। सभी महल तीन मंजिला हैं। पहली मंजिल की छत आड़ी–तिरछी महराबों का सिलसिला है। दूसरी मंजिल की छत ढलवा है। तीसरी मंजिल की छत सपाट है और भार वहन करने के लिए टेकों तथा खम्भों का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक मंजिल लगभग 15 फुट ऊंची है।

सागर जिले के किलों में अनेक सुन्दर महलों का निर्माण तत्कालीन कला प्रेमी शासकों ने करवाया था। राहतगढ़ के किले में स्थित बादल महल ऊंचाई पर स्थित है। इस महल में पहुंचने के लिए पाँच दरवाजों को पार करना पड़ता है। इसका निर्माण 'झेंड' राजाओं ने करवाया था। दाँगी राजाओं की राजधानी सागर से छः मील उत्तर की ओर स्थित है। यहाँ का दाँगी शासकों द्वारा निर्माण कराया गया ''शीश महल'' एक चौकोर भवन है। इसमें दो तल्ले हैं। कक्षों के चारों ओर बरामदे बने है विभिन्न रंगों के चमकदार खपरे, दाँतेदार प्राचीर की पटिया में गुम्बद की तिलियों में एक के बाद एक लगे हुए हैं। गहरा नीला, हल्का नीला जो की डोम की छत पर एवं दीवारों पर एक के बाद एक उपयोग किये गये हैं। यहाँ पर छोटे स्तंभ और बड़े स्तंभों पर भवन का गुम्बद उठाया गया है। गुम्बद नीचे बैलनाकार है एवं ऊपर गोलार्द्ध जो की मोटे पलस्तर युक्त है। चारों ओर कोने के गुम्बद चक्राकार में अलंकृत है।

सागर जिले के मध्यकालीन इतिहास में प्रसिद्ध महल 'खिल्मासा' के किले में निर्मित 'नगीना महल' जिसे कामे–ओ–पविलियन के नाम से जाना जाता है। जिसमें स्तंभ द्वार बरामते और एक अभिबारों पर निकली एक आगे से चोड़ी छत रही होगी केन्द्रीय गुम्बदाकार भाग कुल बारह स्तम्भों पर टिका है जिसका कोने का भाग एक साथ जुड़े हुए चार स्तंभों और बीच का भाग एक साथ जुड़े हुए दो स्तंभों का है। महल में जाली का काम सुन्दर और दार्शनिक है। यह महल आज जर्जर भवन के रूप में अवस्थित है।

इसके अतिरिक्त बुन्देल खण्ड में अनेकों ऐतिहासिक दार्शनिक स्थल है जो भारतीय स्थापत्य कला एवं दर्शन के प्रतीक हैं। मंदिरों का सौंदर्य भी अद्भुत है। यहाँ खजुराहो, ओरछा, देवगढ़, ऐरन, चित्रकूट, पन्ना, अजयगढ़, उन्नाव आदि के मंदिरों को देखकर भारतीय शिल्पकार की मौलिकता का समुचित ज्ञान होता है। शिल्पकार की तीक्ष्ण छेनी ने निर्मम पत्थरों को मोम की भांति छीला और उस पर भारतीय विचार पक्षती भारतीय वातावरण, भारतीय जीवन के विविध अंगों में विहंगम तथा सूक्ष्मतम चित्र उकेरे व आंके है। भारतीय जीवन के दर्शन और संस्कृति को अपना सर्वोच्च लक्ष्य बनाकर शिल्पकारों ने मंदिरों और महलों व किलों का निर्माण किये है, जो विश्व की शिल्प और स्थापत्य कला के इतिहास में अद्वितीय है, जिसे देखकर मानव बुद्धि चकरा जाती है। बुन्देलखण्ड की ये कृतियाँ केवल मनोरंजन का पर्यटन का साधन नहीं है। कौरी वाह वाही की खातिर नहीं गढ़ी गयी बल्कि उनकी उपस्थिति ने भारतीय जीवन के शुष्क कलेवर को अपनी मौलिकता और सजीव सौन्दर्य द्वारा अनुप्रमाणित किया है। ''डॉ. मनीष मिश्र के शब्दों में इन भग्नावशेषों में एक सुप्त अनुगूंज प्राय गूंजती रहती है। जिसे पहचानने के लिए हमें अतीत के स्वर में अपनी चैतना को आत्मसात करना पड़ता है। निर्जीव पड़े ईंट पत्थर के इन टुकड़ों में धरती के उस स्पन्दन को पहचानकर अपने निष्कर्ष निकालने होते हैं तभी इतिहास मुखर होकर एक विराट सांस्कृतिक बोध का पर्याय बनता है।

किसी भी क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी इन अवशेषों से मिलती है जो स्थापत्य कला, मंदिर निर्माण की पुरातन शैलियों के प्रमाण होते है। इन्हीं के द्वारा मनुष्य का कलात्मक अर्जन और सांस्कृतिक संयोजन वह रूप देखने को मिलता है। जो रचनात्मक, निर्माण परक, बुद्धि व निष्ठा, लगन व समर्पण के द्वारा प्राप्त होता है, सभ्यतायें मिट जाती है किन्तु बचे हुए अवशेष अतीत, सभ्यता और समृद्धि की कहानी कहते हुए वर्तमान को एक नई प्रेरणा देते है।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. प्रो. बलभद्र तिवारी, बुन्देली समाज और संस्कृति
[2]. सागर जिले का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. मनीष मिश्र
[3]. बुन्देली बसन्त 2007
[4]. बुन्देली बसन्त 2002
[5]. बुन्देली परिचय, ठाकुर विक्रम सिंह
[6]. चौमासा, म.प्र. 2002

----------00--------